وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ﴿١٩﴾ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ								
रज़ा	चाहता है	सिर्फ़	19	बदला दी जाए	नेमत	से	उस पर	और नहीं किसी के लिए

ع ١ ٢١ ١٧

رَبِّهِ الْاَعْلٰى ﴿٢٠﴾ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿٢١﴾							
	21	राज़ी होगा	और अनक़रीब	20	बुलन्द ओ बरतर	अपना रब	

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوْرَةُ الضُّحٰى (٩٣) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 | (93) सूरतुध धुहा — रोज़े रोशन | आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

وَالضُّحٰى ﴿١﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ﴿٢﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ﴿٣﴾										
3	बेज़ार हुआ	और न	आप का रब	आप (स) को नहीं छोड़ा	2	छाजाए	जब	और रात की	1	क़सम है धूप चढ़ने की (आफ़्ताब)

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ﴿٤﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ								
आप का रब	आप (स) को अ़ता करेगा	और अनक़रीब	4	पहली	से	आप (स) के लिए	बेहतर	और आख़िरत

فَتَرْضٰى ﴿٥﴾ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ﴿٦﴾ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا								
बेख़बर	और आप (स) को पाया	6	पस ठिकाना दिया	यतीम	आप (स) को पाया	क्या नहीं	5	आप राज़ी हो जाएंगे

فَهَدٰى ﴿٧﴾ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ﴿٨﴾ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾									
9	तो क़हर न करें	यतीम	पस जो	8	तो ग़नी कर दिया	मुफ़लिस	और आप (स) को पाया	7	तो हिदायत दी

ع ١ ١١ ١٨

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾								
11	सो इज़्हार करें	अपना रब	नेमत	और जो	10	तो न झिड़कें	सवाल करने वाला	और जो

آيَاتُهَا ٨ ❀ سُوْرَةُ الشَّرْحِ (٩٤) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 | (94) सूरतुश शर्ह — खोलना | आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿١﴾ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ﴿٢﴾								
2	आप (स) का बोझ	आप (स) से	और हम ने उतार दिया	1	आप (स) का सीना	आप (स) के लिए	खोल दिया	क्या नहीं

الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ﴿٣﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿٤﴾ فَاِنَّ مَعَ									
साथ	पस बेशक	4	आप (स) का ज़िक्र	आप (स) के लिए	और हम ने बुलन्द किया	3	आप (स) की पुश्त	तोड़ दी	जो-जिस

الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٥﴾ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٦﴾ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ﴿٧﴾										
7	मेहनत करें	आप (स) फ़ारिग़ हों	पस जब	6	आसानी	साथ दुश्वारी	बेशक	5	आसानी	दुश्वारी

ع ١ ٨ ١٩

وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿٨﴾			
8	रग़बत करें	अपना रब	और तरफ़

और किसी का उस पर एहसान नहीं कि जिस का बदला दे, (19) सिर्फ़ अपने बुज़ुर्ग ओ बरतर रब की रज़ा चाहता है। (20) और अ़नक़रीब राज़ी होगा। (21)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

क़सम है आफ़्ताब की रोशनी की, (1) और रात की जब वह छाजाए, (2) आप (स) के रब ने आप (स) को नहीं छोड़ा और न बेज़ार हुआ। (3) और आख़िरत आप (स) के लिए पहली (हालत) से बेहतर है। (4) और अ़नक़रीब आप (स) को आप का रब अ़ता करेगा, पस आप (स) राज़ी हो जाएंगे। (5) क्या आप (स) को यतीम नहीं पाया? पस ठिकाना दिया, (6) और आप (स) को बेख़बर पाया तो हिदायत दी, (7) और आप (स) को मुफ़लिस पाया तो ग़नी कर दिया। (8) पस जो यतीम हो उस पर क़हर न करें, (9) और जो सवाल करने वाला हो उसे न झिड़कें। (10) और जो आप (स) के रब की नेमत है उसे इज़्हार करें। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

क्या हम ने आप (स) का सीना नहीं खोल दिया? (1) और आप (स) से आप का बोझ उतार दिया। (2) जिस ने तोड़ दी (झुका दी) आप (स) की पुश्त, (3) और हम ने आप (स) का ज़िक्र बुलन्द किया। (4) पस बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (5) बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (6) पस जब आप (स) फ़ारिग़ हों तो (इबादत में) मेहनत करें। (7) और अपने रब की तरफ़ रग़बत करें (दिल लगाएं)। (8)